ISSN: 2249-894X IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF) VOLUME - 6 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2017

REVIEW OF RESEARCH

मराठी लेखिका अनुराधा वैद्य की कहानियों में नारी पात्र

डॉ. विनयकुमार एस. चौधरी
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, तुलजापुर (महाराष्ट्र).

प्रस्तावना :

मराठी साहित्य की प्रसिध्द कहानीकार अनुराधा वैद्य मराठवाडा की मशहूर लेखिका है। कहानी के अलावा आपने उपन्यास, बालकथा, बाल उपन्यास, कविता, एकांकी, आत्मकथा आदि विधाओं पर भी कलम चलाई। आप कई पुरस्कारों से भी सम्मानित हैं। आपके 17 कहानी संग्रह प्रकाशित है – 'अस्तित्वरेषा, जोगवा, बाकीक्षेम, अजुनि खुळा हा, मनुष्य हाट, गुंफण, अंतर, प्रवाह, काजळ, तीन चमचे प्रोत्साहन, चित्रफल, देहस्थ, कबंध, जन्म मृत्युचे भातुके, भूमिका, पंख गारूड आदि।' मराठी के मशहूर लेखक शंकर पाटील अनुराधा वैद्य के बारे लिखते हैं। 'अनुराधाबाई का साहित्यिक व्यक्तिमत्व जैसे मानवी सुख–दुख में रहनेवाला है। वैसे उस व्यक्तिमत्व को विनोद का भी कोई विरोध नहीं। यथा संभव विनोद यह भी उनके कलम का एक स्वाभाविक गुण मुझे दिखाई देता है। जीवन का विरोधाभास उन्हें सहजता से दिखता और अचूकता से व्यक्त करने की कला भी उनके पास है।' (अजुनि खुळा हा – अनुराधा वैद्य –पृ.9)

अनुराधा वैद्य ने अपनी कहानियों में घटना प्रसंगों को चित्रित नहीं किया बल्कि उसकी क्रिया प्रतिक्रिया को प्रस्तुत किया है। जातिवाद, सामाजिक मान्यता, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, प्रेम समस्या, काम संबंधी, विधवा विवाह, अस्तित्वमुलक संवेदना को लेकर स्पष्ट किया। नारी होने के कारण नारी के अंतरमन की संवेदना को झेलते हुए भारतीय नारी के रूप और समस्याओं को अंकित किया है। भारतीय संस्कृति पुरूष प्रधान है। नारी को हमेशा हीनता की दृष्टि से देखा है। नारी इसका विरोध करे तो उसे संकट का सामना करना पडता। 'जुगार' की प्रतिभा ऐसी ही रूढियों की शिकार है। वह निराश्रित और विवश है। उसकी स्वतंत्रता पूरी तरह से छीन ली गई है और उसकी इच्छा के खिलाफ उसे वहाँरहना पडता है। पुरूष उसे भोग की वस्तु मानता है'बिकट वाट वहिवाट' में ललिता का बॉस भी इसी विचार धारा में आता है। 'तु किसलिए बकवास करती हो। तुम्हारी और उनकी बराबरी है क्या ? तू सिर्फ मेरी है।' (जोगावा – बिकट वाट वहिवाट – अनुराधा वैद्य – पृ. 123) वास्तव में ललिता के बॉस के वक्तव्य में खोखलापन है। कहानी में ललिता जहाँ अपनी भूल के कारण पश्चाताप की आग में जलकर पवित्र बन जाती हैं लेकिन वहाँ बॉस वासना का किडा बनकर ललिता के सामने घुटने टेक देता है।

भारतीय समाज परंपरावादी है, कुछ अमानवीय तो कुछ पुरूष निर्मित है। उसके मन में नारी अनादिकाल से गुलाम है। 'शपथ' कहानी की नायिका बेझिझक कहती हैं – मुझमें क्या कमी थी ? यह कम से कम मुझे तो कहना था ? आप को सुख देने में मैंने कभी थोडी भी कसर नहीं की। ऐसा क्या चाहिए था, जो मैं नहीं दे सकती थी ?' (मनुष्यहाट – शपथ – अनुराधा वैद्य पृ. 17) हमारे समाज में नारी का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं

है। वह एक भोग की वस्तु हैं। 'बाकी क्षेम' कहानी में इसकी पृष्टि मिलती है। 'वो मुझे प्यार करती है। वह वयस्क है तो क्या हुआ ? उसकी भी इच्छा है और मुझे भी वह अच्छी लगती है। जवानी में ही तुम्हारी तरह वह बुढी हुई। शी इज स्टिल चिअर फुल अँड सेक्सी।' (बाकी क्षेम – अनुराधा वैद्य पृ. 87) पुरूष प्रधान संस्कृति ने नारी में यह भावना भर दी है कि वह अबला, दुर्बल और कमजोर है। वह सिर्फ पुरूष की पनाह में रह सकती है। उसके बिना वह मुल्यहीन है। इसी कारण उसके दुख की कोई सीमा नहीं है। वह अपनी शक्ति, बल, धैर्य, सामर्थ को भूल गई है। वह केवल परंपरावादी रह गई है। 'पुण्य' कहानी की उमा परंपरावादी है। जेठानी और सास उमा को पुरी परंपरा के अनुसार कार्य करने के लिए कहते हैं। पति कहता है – 'हुआ न तुम्हारे मन के जैसा ! वरना ब्रम्हचारी अतृप्त ही मरनेवाला है। अभी तीन दिन मातम मनाना मतलब मुसीबत। बीवी नजदीक होते हुए भी उसे छूना नहीं.....! फिर वो तो बेचारा.....।' (अस्तित्व रेषा – पुण्य – अनुराधा वैद्य – पृ. 89) 'दावा' कहानी के नारी पात्र भी परंपरा के अनुसार बर्ताव करते है। पति के मृत्यु के बाद भी नारी परंपरा के अनुसार उस परिवार से नाता रखना चाहती है, लेकिन सास उस हादसे को उसे जिम्मेदार मानती है। 'उस मनहुस की वजह से यह सब हुआ। मुसिबत की वजह से यह सब हुआ। मुसबित बनकर आई है पहले पति को खा गई, अब हमें बरबाद करने निकली है।' (बाकिक्षेम – दावा – अनुराधा वैद्य – पृ. 33)

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव, आधुनिक शिक्षा का प्रसार और नई परिस्थितियों में नारी विचारों को प्रोत्साहित किया है। और वह पुरानी मान्यताएँ तथा अपने अधिकारों से सचेत हुई है। भारतीय संस्कृति में पुरूष के लिए अलग नियम और स्त्री के लिए अलग नियम, यह जो भेद नीति है, वह नारी के अस्तित्वपर ही आघात है। आधुनिक नारी को यह अस्विकार है। वह पहले प्रतिवाद, बाद में विरोध और अंत में विद्रोह के रूप में सामने आती है। पुरूषों के लिए सामाजिक नियम यह है कि वह अनेकों के साथ प्रेम संबंध को योग्य मानता है। 'माझ्या बाबांची मैत्रिण' कहानी की कुमुद इस परंपरा का विरोध करती है। वह दो व्यक्ति के साथ एक ही दफा प्रेम करती है। एक साथ दो व्यक्ति पर प्रेम प्रकट करनेवाली नारी पर अविश्वास प्रकट किया जाता है। तब वह कहती है – 'कैसा लव्ह मॅरेज शरद ! तभी उन्हें सिर्फ मजा लेना था, मेरे साथ। लेकिन मेरे पिताजी ने पकडकर शादी करवा दी। उनके परिवार से बहुत विरोध हुआ। वे तो कहते है, उनकी जिंदगी का नुकसान हुआ।' (जोगवा – माझ्या बाबांची मैत्रिण – अनुराधा वैद्य – पृ. 141) उस वक्त कुमुद को न आश्चर्य हुआ और न दुख। वह शरद के माध्यम से पुरूष जाति को अपने कार्य की समीक्षा करने के लिए मजबूर कर देती है। 'मांजर' कहानी की नायिका स्वाती नौकरी करनेवाली लडकी है। वह सतीश से प्यार करके शादी करना चाहती थी। लेकिन सतीश अपना पुराना मकान अय्यंगार को बेचकर भोपाल में नौकरी के लिए जाता है। स्वाती विद्रोह करते हुए अपनी माँ से कहती है– 'मां मुझे सतीश से ब्याह नहीं करना, मैं अय्यंगार से ब्याह करनेवाली हूँ। हम रजिस्टर ब्याह की नोटिस भी देकर आये है।' (गारूड – मांजर – अनुराधा वैद्य पृ. 70)

'मुलाखत' कहानी की नीता वर्तमान व्यवस्था के विरूध्द कदम उठाती है। वह समाज के पुरे नियमों को तोडती है। लडकी को देखने की परंपरावादी प्रथा का विरोध करती हुई दादी मां से कहती है – 'अरे दादी वह झिनीबेबी भी शादी के पहले पचास लोंगो के साथ रह चुकी है और उसे क्या हिंदू और मुसलमान ऐसे कितने संबंध होते हैं उनके हर समय क्या गोत्र पत्रिका ही दिखायेंगे क्या ? (अजुनि हा खुळा – मुलाखत – अनुराधा वैद्य पृ. 124)

विवाहको स्त्री –पुरूष के बीच सामाजिक नियम का समझौता बना दिया। स्त्री – पुरूष स्वेच्छा से माता – पिता अथवा अभिभावाकों द्वारा प्राकृतिक यौन संबंधों की पूर्ति, प्रजोत्पति, आत्मिक समाधान एवं समाज में नैतिकता और अनुशासन बनाए रखने के लिए मरते दम तक परस्पर संबंध में रहते है। वर्तमान युग में हर लडकी उदार विचारों का शिक्षित अमीर पति चाहने लगी है। 'सोबत' की प्रेमा एक पाठशाला में नौकरी करती है। खुद को कुरूप मानकर लोगों से मुंह मुकरती है। माता – पिता उसकी चिंतित है। पिताजी के मृत्यु के पश्चात वह बैचेन होती है। देशमुख को बिनती करती है – 'आप तो मुझसे मुंह मत फेरो! कोई कैसा भी बर्ताव करे, मैं तुम्हारे लिए इस घर में आई। आप भी मुझसे घृणा करोगे तो मैं पागल हो जाऊंगी।' (जोगवा – सोबत – अनुराधा वैद्य पृ. 59) 'काजल' कहानी में पुराने संस्कारों और रूढियों को दर्शाया है। कहानी विवाह समस्या को इंगित करती है। नायिका रूकी अनपढ और नाबालिका है जो रोजाना बर्तन मांजकर मां का हाथ बटोरती है। पिता शराबी है तो भाई आवारा। मां एक ही रट लगाती है – तेरी शादी के बाद मैं निश्चिंत हो जाऊंगी। तेरा बाप वैसा। तेरा भाई वैसा। मैं तेरी जिम्मेदारी कब तक झेलुंगी।' (काजल – अनुराधा वैद्य – पृ. 86)

आधुनिक युग में आंतर्जातीय विवाह धडाम से हो रहे हैं। सुंदरता और गुणों से प्रभावित स्त्री – पुरूष में प्रेम पनपता है। ऐसे समय जाति की दीवारें रोक नहीं पाती और प्रेमी युगल आंतर्जातीय विवाह करते हैं। 'श्री शिल्लक' कहानी सायली आंतर्जातिय विवाह करती है। पिता दादासाहब यह सदमा सहते नही, दिल का दौरा पडने से उनकी मौत होती है। 'पहाट होताना' कहानी की नायिका प्रीति अपने पडोस में रहनेवाले बंगाली लडके निखिल से प्यार करती है, जो केवल दसवी पास बेरोजगार है। दोनों घर से भागकर ब्याह कर लेते है। तब प्रीति की माँ विरोध के रूप में समझाती है– 'तो, सुनों! हमें वह पसंद नहीं है, वह बंगाली है, परजातीय है ऐसा नहीं बल्कि वह तुम्हारे लायक नहीं है।' (प्रवाह – पहाट होताना – अनुराधा वैद्य. पृ.28) 'राखण' कहानी की सोनल 'खेळ मांडियला' का शरद, 'काटयांच कुरूप' की सुहासिनी आदि पात्र आंतर्जातीय विवाह का समर्थन करते हैं।

अनुराधा जी ने कहानियों के पात्रों के माध्यम से कई समस्याओं को उद्घाटित किया है। इसमें विधवा विवाह नारी के सामने आज भी प्रश्नवाचक चिन्ह बनकर खडा है। प्राचीन मान्यताओं में विधवा नारियों को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं थी। आज भी कोई इसका खुलकर समर्थन करते हुए नजर नहीं आता। याने विधवा विवाह समस्या समस्या ही है। 'अवशेष' कहानी में मंदा विधवा नारी है, जो एक जवान प्रपाठक है। उसे अकाली वैधव्य आता है। पति श्रीकांत की मृत्यु के बाद नगरकर की ओर आकर्षित होती है। मंदा की आर्थिक स्थिति ठीक थी लेकिनशारीरिक तृष्णा हेतु नगरकर को करीब कर लेती है। भैया– भाभी की बातें सुनकर बेचैन होती है। भैया से कहती भी है – 'भैया, मेरा विवाह कर दो। नहीं तो नगरकर को मेरा स्वीकार करने के लिए कहो। मैं अभी पुरी हार चूकी हूँ। मुझे संसार करना है। कहाँ है श्रीकांत ? कब का मर चूका है वह। उसके साथ मैं कैसे मरूंगी ? मुझे जीना है, जिंदगी का मजा लेना है।'(अस्तित्वरेषा – अवशेष– वैद्य – पृ. 21) 'दावा' कहानी की सरू, 'निर्णय' कहानी की लीलाताई, 'उठाठेव' कीवसुधा आदि नारी पात्र के साथ परिस्थिति का खिलवाड समझते है पर समाज का कोई भी उससे समझौता नहीं करता। उसकी असमर्थता तथा मजबूरी आदि का फायदा उठाना चाहते हैं।

वैद्य जी की कहानियों में स्वच्छंद यौन संबंध का ब्यौरा भी मिलता है। 'सावट' कहानी में दुखाने की पत्नी प्रेम और वासना की शिकार है। उसमें यौवन की अपार शक्ति है। अपने मुहल्ले के पुलिस के साथ संबंध जोड लेती है। कहानी की एक पात्र विमला इस बारे में ताना मारती है तो वह क्रोधित होकर कहती है – 'तुम्हारे बच्चे क्या नभ से गिरे है ? बडी आई पतिव्रता। मैं मां बननेवाली हूँ, इसलिए नफरत करती है। जल्द से जल्द मरेंगे, तुम्हारे बच्चे, निसंतान, होगी।' (जोगावा–सावट–अनुराधा वैद्य –पृ. 96) 'बिकट वाट वहिवाट' की ललिता दफ्तर के बॉस नायायज संबंध रखती है। 'दृष्ट' कहानी की यव्वा आप्पा के साथ विवाहित होकर भी दुकान में काम करनेवाले नागुरे मास्तर के साथ यौन संबंध स्थापित करती है। 'काजव्याचे झाड' की इला, 'अंतरला ऐलतीर' की सुषमा आदि बेहिचक यौन संबंध स्थापित करती है। कहानियों के कुछ पात्र आर्थिक तंगी से तो कुछ पात्र शारीरिक तृष्णा के लिए मजबूर होकर यौन संबंध स्थापित करते हैं।

अनुराधा वैद्य जी की कहानियों के पात्र नारी ही है। हर समस्या का समाधान तो नहीं लेकिन समस्या हल करने का सुझाव यह पात्र प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में देते है। अनमेल विवाह हो या दहेज प्रथा, अवैध प्रेम हो या विवाह विच्छेदन, अकेलापन हो या अंधविश्वास, शहरों का आकर्षण हो या कुमारी मां हर समस्या से घिरें हुए धिरोदात्त नारी पात्र वैद्य जी की कहानी में मिलते हैं। जो समस्या की वजह से अपुर्ण है पर आपने आप में पुर्ण है। अनुराधा जी एक चिंतक और कलाकार है जो अपने समकालीन समाज का हर एक पहलू अपने संस्कारों के आधार पर मूल्यांकित किया है। आधुनिक नारी न तो पुजा की सामग्री बनना चाहती है, न संभोग की वस्तु और न संपत्ति की, वह बनना चाहती है केवल संगीनी। वैद्य जी ने प्रस्तुत कहानियों के माध्यम से भारतीय समाज की संस्कृति नीति मूल्यों के साथ आधुनिक भारतीय समाज का चित्रण भी प्रस्तुत किया है।